दिनाँक :- 24-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ाकिर आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- सात

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- धर्म

प्रतित्य समुत्पाद (chain of dependent originations)

प्रतित्यसमुत्पाद बौद्ध दर्शन का सार है। यह द्वितीय तथा तृतीय आर्य सत्यों में निहित है। इसके अनुसार प्रत्येक कारण का एक कार्य होता है और प्रत्येक कार्य का एक-एक कारण। एक कर्म के उत्पन्न होने से दूसरा उत्पन्न होता है तथा एक कर्म के विनाश से दूसरे का विनाश होता है।

Scanned with CamScanner

महात्मा बुद्ध ने कार्य कारण श्रृंखला 12 तत्वों को उद्घाटित किया।

① अविद्या ② संस्कार ③ विज्ञान ④ नामरूप
⑤ सलायतन ⑥ स्पर्श ⑦ वेदना ⑧ तृष्णा
⑨ उपादान ⑩ भव ⑪ जाति ⑫ जरामरण

बौद्ध दर्शन का स्वरूप : अनात्मवादी क्षणिकवादी, अनिश्वरवादी पुनर्जन्म में विश्वास जैसा है।

बौद्ध दर्शन के अनुसार यह सृष्टि विभिन्न चक्रों में विभाजित है। इसमें एक बुद्ध चक्र होता है तो दूसरा शून्य चक्र। हम भाग्यशाली है कि हम बुद्ध चक्र में है।

इनमें चार बुद्धों में उपदेश दिया। ① ककुच्छन्द ② कनकमुनि ③ कश्यप ④ शाक्य मुनि तथा ⑤ मैत्रेय आने वाला बुद्ध।

बुद्ध धर्म के त्रिरत्न :- बुद्ध संघ तथा धम्म।

बौद्ध धर्म में भिक्षुओं के लिये 10 शील का अनुसरण आवश्यकता बताया गया है जिसमें पाँच शील उपासकों के

Scanned with CamScanner

लिये भी अनिवार्य किये गये हैं।

① दूसरे के धन की इच्छा न करना ② हिंसा से दूर रहना
③ असत्य नहीं बोलना ④ मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना
⑤ व्यभिचार नहीं करना ⑥ संगीत एवं नृत्य में भाग नहीं लेना
⑦ सुगंधित द्रव्यों का उपयोग नहीं करना
⑧ असमय भोजन नहीं करना
⑨ सुरक्षित बिस्तर पर नहीं सोना
⑩ किसी प्रकार के द्रव्य का संचय नहीं करना

बौद्ध संगीति →

बौद्ध दर्शन में चार बौद्ध संगीतियों का विवरण मिलता है इसकी जानकारी के मूल स्त्रोत दीपवंश (प्रथम तथा द्वितीय संगीति) तथा महावंश (तृतीय संगीति) हैं।

प्रथम बौद्ध संगीति : →

यह बौद्ध संगीति बुद्ध की मृत्यु के तत्काल बाद राजगृह के सप्तपर्णी गुफा में अजातशत्रु के काल में हुई।

इसकी अध्यक्षता महाकस्सप नामक आचार्य ने की। इस संगीति में उपालि ने विनय पिटक का पाठ किया तथा आनंद ने सुत्त पिटक का। इस सम्मेलन में 500 भिक्षुओं ने भाग लिया।

द्वितीय बौद्ध संगीति :—

द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन कालाशोक के शासन काल में बुद्ध की मृत्यु के लगभग 100 वर्ष पश्चात वैशाली में किया गया।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता स्थविर यश या सर्वकामिनी ने की। इस सम्मेलन में अनुशासन के 10 नियमों पर मतभेद उभरा। मतभेद दो गुटों के मध्य था। पूर्वी तथा पश्चिमी पूर्वी गुट में मगध तथा वैशाली के भिक्षु थे ये वज्जिपुत्तक नाम से जाने जाते थे। पश्चिमी गुट में अवन्ति क्षेत्र के भिक्षु थे। पश्चिमी गुट (अवन्ति क्षेत्र) जिन्होंने विनय के नियम को ही माना वे स्थविर अथवा थेरवादी कहलाये।

पूर्वी गुट जिन्होंने परिवर्तन को स्वीकार किया वे महासंघिका या आचार्यवाद कहलाने लगे।

प्रथम का नेतृत्व महाकच्चायन ने तथा दूसरे का नेतृत्व महाकस्सप ने किया।

अंत में थेरवाद ग्यारह पंथों में तथा महासंघिका 7 पंथों में विभाजित हो गये। ये मूल रूप से हीनयानी पंथ थे। किन्तु उनमें से कुछ ने कुछ इस प्रकार के सिद्धान्तों को अपनाया जो महायान के उत्थान के लिये उत्तरदायी सिद्ध हुआ।

महासंघिका के 7 पंथों में से निम्नांकित प्रमुख हैं: पूर्व शैल, अपर शैल, चैत्याकाश, वैतुल्याकाश, वेतुलवाद

तिब्बती परंपरा के अनुसार महाकच्चायन ने थेरवाद सम्प्रदाय की स्थापना की।

थेरवाद का सबसे महत्वपूर्ण सम्प्रदाय सर्वास्तिवादियों

का था, जिसकी स्थापना शहुलभद्र ने की थी आगे इसका विस्तार गंगाघर तथा कश्मीर में हुआ। कुषाण काल में यह सम्प्रदाय मध्य एशिया तथा चीन तक पहुँच गया।

महासांघिक सम्प्रदाय के संस्थापक महाकस्सप था। प्रारंभ में इसका मुख्य केन्द्र वैशाली में था। बाद में यह आंध्र प्रदेश में लोकप्रिय हुआ जहाँ इसका प्रधान केन्द्र अमरावती तथा नागार्जुनकोंडा था।

तीसरा बौद्ध संगीति :—

तृतीय बौद्ध संगीति मौर्य शासक अशोक के काल में पाटलिपुत्र में आहूत की गई। इसकी अध्यक्षता मोग्गलिपुत्र तिस्स ने की। यह सम्मेलन मुख्यतः स्थविरवादी विचारको का ही सम्मेलन था।

इस सम्मेलन में महासांघिक सहित अन्य 18 उपसम्प्रदायो का बहिष्कार किया गया। इन 18 उपसम्प्रदायो में एक महत्वपूर्ण

बौद्ध सम्प्रदाय सम्मित्या भी था जो आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता था।

विभिन्न मत मंतातरो को खंडित करने वाले तथ्यो को लेकर कथावत्थु की रचना की गई जिसे अभिधम्म पिटक को सातवें ग्रंथ के रूप में शामिल किया गया।

रूढ़िवादी थेरवाद ने कालांतर में महासंघिका तथा वज्जि पुत्तक ~~सम्प्रदाय~~ को जन्म दिया। आगे वज्जिपुत्तक के चार तथा महासंघिका के दो अनुभाग बने : पहला सर्वास्तिवादी तथा दूसरा धर्मगुप्तिक। विद्वानो द्वारा तृतीय बौद्ध संगीति को संदेहास्पद माना गया है क्योंकि के किसी भी अभिलेखो से इसकी पुष्टि नही होती है। यद्यपि श्रीलंकाई पंश साहित्य महावंश में इसकी चर्चा मिलती है।

चतुर्थ बौद्ध संगीति :— बौद्ध धर्म की चौथी तथा अंतिम संगीति कुषाण शासक कनिष्क के राज्य काल में हुई।